

# समाजशास्त्र का महत्व (Importance of Sociology)

classmate

Date \_\_\_\_\_

Page \_\_\_\_\_

समाजशास्त्र के उपयोग या महत्व का तात्पर्य यह है इस विषय से क्या लाभ है, समाज में इस विषयक क्या उपयोगिता है, व्यक्ति व समाज के संबंधों में अध्ययन में समाजशास्त्र की क्या आवश्यकता है। समाजशास्त्र ही एक ऐसा विषय है, अर्थात् एक ऐसा विज्ञान है जिससे समाज के बारे में ज्ञान होता है और सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति को इसका ज्ञान आवश्यक है। समाजशास्त्र का महत्व निम्नलिखित है। —

## ① मानव समाज का वैज्ञानिक ज्ञान: —

समाजशास्त्र मानव समाज का वैज्ञानिक ज्ञान कटाता है। यह समाज का सामान्य विज्ञान है और सामाजिक जीवन का व्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करता है। समाजशास्त्र में हम समाज का अध्ययन करते हैं। इसका यह अर्थ है कि किसी एक समाज या एक राष्ट्र के समाज से नहीं है, बल्कि विश्व के समाज व सामाजिक संबंधों से है। समाज का निर्माण विभिन्न संस्थाओं व समूहों द्वारा होता है। ये संस्थाएँ व समूह परिवार, विवाह, धर्म, राज्य आर्थिक संस्थाएँ और समुदाय आदि से हैं। समाजशास्त्र के माध्यम से हमें इन संस्थाओं व समूहों और उनके अन्तः संबंधों का ज्ञान होता है।

## ② व्यक्तिगत जीवन को समझने में सहायक: —

समाजशास्त्र के द्वारा व्यक्तिगत जीवन को समझने में सहायता मिलती है। किसी व्यक्ति के क्या गुण एवं योग्यताएँ हैं, किसी कामियाँ स्व सीमाएँ हैं और समाज में उनकी क्या स्थिति है एवं क्या कार्य है, आदि-आदि को जानना अनिवार्य है। व्यक्ति एक ऐसी कड़ी है जो सभी सामाजिक संस्थाओं और समूहों से

संबंध है। यह समाज रूपी विशाल भवन की नींव है। इसी के ऊपर समाज का संगठन और विघटन निर्भर है। समाजशास्त्र व्यक्ति का अध्ययन करता है। इसके अध्ययन से व्यक्तिगत जीवन अधिक से अधिक संगठित होता है, जो सामाजिक संगठन की आधारशिला है।

③ पारिवारिक संगठन में सहायक :-

व्यक्ति परिवार और समाज रूप दुस्तरे के रूप है। परिवार के संगठन पर ही व्यक्ति व समाज में संगठन की कल्पना की जा सकती है। परिवार के निर्माण के आधार पर विवाह का रूप क्या हो, परिवार के क्या उद्देश्य व कार्य है, पति-पत्नी माता-पिता, पुत्र-पुत्री व अन्य संबंधियों के बीच का संबंध कैसा हो, आदि-आदि का ज्ञान पारिवारिक जीवन को संगठित व सुखी बना सकता है। समाजशास्त्र हमें इनका सही व संतोषप्रद जवाब देता है।

④ सामाजिक स्थिरता को स्थापित करने में सहायक :-

समाजशास्त्र का ज्ञान हमें सामाजिक स्थिरता को बनाये रखने में सहायक होता है। सामाजिक स्थिरता समाज का आधार है और यही समाज की प्रगति का मूल मंत्र है। यहाँ सामाजिक स्थिरता से तात्पर्य परिवर्तित परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करना सीखें या फिर उन परिस्थितियों को अपने अनुकूल करें। इसके सामाजिक स्थिरता को धक्का नहीं फुड़ेंगे है और समाज संगठित रहता है व प्रगति करता है।

⑤ सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सहायक :-

समाज में अनेक समस्याएँ पायी जाती हैं। इन समस्याओं को दो भागों में बाँटा गया है -

① सामान्य समस्याएँ, जिसमें पारिवारिक तनाव

नैतिक मूल्यों का धारण व व्यक्तिवादिता आदि आते हैं। (ii) व्याधिवीच समस्याएँ, जिल्लमे अपराध हिल्ला, व्यत्रिचार आदि आते हैं, इन समस्याओं को सुलझाने के लिए उनकी प्रकृति व कारणों को अच्छी तरह समझना जरूरी है। समाजशास्त्र इन समस्याओं से जुड़े तथ्यों को प्रकृत करता है, कारणों की व्याख्या करता है व सुधार के उपाय बताता है।

### 6) सामाजिक निपोजन में सहायक :-

सामाजिक निपोजन के बिना आर्थिक निपोजन संभव नहीं है। सामाजिक निपोजन के अन्तर्गत मूल रूप से साम्मिलित किए जाते हैं - (i) शिक्षा, स्वास्थ्य व आवास सुविधाओं का विकास, (ii) ग्रामीण एवं नगरीय कल्याण, (iii) दलित व कमजोर वर्गों का कल्याण, और (iv) सामाजिक सुल्ला। सामाजिक निपोजन की सफलता के लिए समाज की संरचना, प्रतिमानों मूल्यों व विश्वासों आदि का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान समाजशास्त्र के ही माध्यम से ही लिपा जा सकता है। समाजशास्त्र समाज का व्यवस्थित व क्रमबद्ध अध्ययन करनेवाला विज्ञान है।

### 7) विकास में सहायक :-

विकास मानव जीवन की आधारशिला है। इल्ला उद्देश्य सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारना है। समाजशास्त्र का ज्ञान विकास में सहायक रहा है। ग्रामीण विकास की बात हो या नगरीय विकास की समाजशास्त्रीय ज्ञान का लाभ है। अब तो ग्रामीण समाजशास्त्र या नगरीय समाजशास्त्र हो सभी में समाजशास्त्र का मध्य बढ़ता जा रहा है। समाजशास्त्र एक उपयोगी विज्ञान है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टिकोण से समाजशास्त्र का मध्य बढ़ता जा रहा है।